जे.डी.ई.ई./एफ–14/2025

शूकर प्रजनन एवं श्वसन सिंड्रोम (पी.आर.आर.एस.)

अजय कुमार यादव, जैस्मिन पटेल, पी.वी.एस.एस. देदिप्या,
मुकेश भट्ट, अखिलेश कुमार, कौशल किशोर रजक, बबलू कुमार,
रविकान्त अग्रवाल एवं रूपसी तिवारी

भा.कृ.अनु.प.– भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर–243122 (उ०प्र०) भारत

शूकर प्रजनन एवं श्वसन सिंड्रोम (पी.आर.आर.एस.)

यह शूकरों की एक नई उभरती हुई ट्रांसबाउंड्री विषाणु जनित बीमारी है, जो मादा शूकरों में प्रजनन समस्या और अन्य शूकरों में तेज बुखार के साथ-साथ गंभीर श्वसन समस्या पैदा करता है, जिसके कारण बड़ी संख्या में रोग ग्रस्त शूकरों की मृत्यु हो जाती है और आर्थिक नुकसान होता है।

भारत में इस बीमारी का पहला प्रकोप जून 2013 में मिजोरम से सामने आया था।

रोग (नैदानिक लक्षण) की पहचान कैसे करें ?

1. नवजात शूकरों एवं ग्रोअर शूकर में-

फार्म के लगभग सभी शूकर एक या दो दिनों के भीतर बीमार पड़ जाते हैं और निम्नलिखित लक्षण दिखाते हैं:

(क) उच्च बुखार
(ख) सुस्ती और भूख न लगना
(ग) एक साथ एक कोने में जमा होना
(घ) कान की नोक, थूथने एवं कभी-कभी पूरे शरीर की त्वचा का लाल/नीला रंग का होना
(ङ) सांस लेने में कष्ट
(च) छोटे शूकरों में उच्च मृत्यु दर

पिछले पैरों का रंग लाल होना

2. मादा शूकरों में:

गर्भवती शूकर अन्य शूकरों की तरह ही समान नैदानिक रोग से पीड़ित होती हैं। इसके अलावा निम्नलिखित नैदानिक लक्षण भी देखे जाते हैं:

(क) गर्भपात
(ख) मृत शूकरों का जन्म
(ग) कमजोर पिगलेट का जन्म, जो अंततः मर जाते हैं।

कानों की नोकों का नीला रंग

(घ) गर्भपात/ मृतभ्रूण के त्वचा पर रक्तस्राव और पेट में खूनी तरल पदार्थ के संचय को दर्शाता है।

मादा शूकरों में गर्भपात

मृत शूकरों में लक्षण:

- कान के सिरे या पूरी त्वचा का रंग नीला पड़ जाता है।
- फेफड़े सूज जाते हैं तथा स्पंजी रहित और रक्तस्त्रावी हो जाते हैं।
- लिम्फनोड्स गहरे लाल रंग सूजे हुए होते हैं।
- तिल्ली में सूजन, पिनपॉइंट हैमरेज या किनारों पर काले रंग का क्षेत्र (रोधगलन) दिखाता है।
- गर्भपात हुए भ्रूण अलग–अलग आकार के होते हैं।
- गहरे लाल रंग की त्वचा और पेट में खूनी तरल पदार्थ का जमा होना।

रोग का निदान

- बीमारी का निदान इसके नैदानिकी लक्षण एवं इतिहास के आधार पर की जा सकती है।
- मृत शूकरों में पोस्टमार्टम निष्कर्ष के आधार पर बीमारी की पहचान की जा सकती है।
- वायरस आइसोलेशन, फ़्लोरोसेंट एंटीबॉडी टेस्ट, इम्यूनोहिस्टोकेमिस्ट्री के आधार पर बीमारी की पुष्टि की जाती है।
- उत्तकों के नमूनों और शरीर के तरल पदार्थ में विषाणु का पीसीआर द्वारा पता लगाना।
- एलिसा द्वारा एंटीबाडी का पता किया जा सकता है।

प्लीहा का बढ़ना

उपचार

- कोई प्रभावी उपचार उपलब्ध नहीं है।
- बीमारी से प्रभावित एवं ठीक हो चुके शूकर अन्य स्वस्थ शूकरों के लिए रोगवाहक हो सकते हैं। ऐसे शूकरों को हटा दें या वैज्ञानिक रूप से वधकर अच्छे से पकाकर मांस प्रसंस्करण करें।

बढ़े हुए लिम्फ़ग्रंथियां

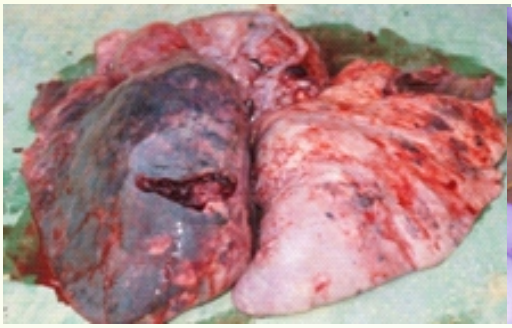

रक्तस्रावी निमोनिया

गर्भस्थ भ्रूण के उदरगुहा में खूनी तरल पदार्थ

बचाव एवं रोकथाम

- पी.आर.आर.एस. के परीक्षण के बिना अपने फार्म में किसी शूकर के प्रवेश की अनुमति न दें।
- अज्ञात स्त्रोतों से शूकरों को न लाएं।
- कृत्रिम गर्भाधान के लिए पीआरआरएस मुक्त शूकर के वीर्य का प्रयोग करें।
- आगंतुकों की आवाजाही को प्रतिबंधित करें और सख्त जैव सुरक्षा उपायों का पालन करें।
- रोग के प्रकोप के समय, संक्रमित शूकरों को फार्म से बाहर न जाने दें अर्थात् शूकरों का क्रय और विक्रय दोनों बंद कर दें।
- नियमित सीरो–निगरानी करें और सीरो–पॉजिटिव शूकरों का वध करें।
- मृत शूकरों के शव दफनाएँ या जलाएँ।
- प्रकोप के मामले में, प्रभावित फार्म के शूकरों को कभी भी बूचड़खाने को छोड़कर फार्म से बाहर नहीं जाने दें।
- इस बीमारी का टीका अभी भारत में उपलब्ध नहीं है अर्थात् कड़ी जैवसुरक्षा के नियमों का पालन कर के ही हम इस बीमारी से बच सकते हैं।

संरक्षक एवं निर्देशन	:	**डॉ. रूपसी तिवारी**, संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा
सम्पादक	:	**डॉ. अखिलेश कुमार**, वरिष्ठ वैज्ञानिक, औषधि विभाग **डॉ. रूपसी तिवारी**, संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा
प्रकाशक	:	**डॉ. त्रिवेणी दत्त**, निदेशक एवं कुलपति
		भाकृअनुप– भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर
संस्करण	:	2025
मुद्रक	:	**बाइट्स एण्ड बाइट्स**, बरेली